अलंकार ग्रंथ

शिवराजभूषण

(भूषणकविकृत)

संग्रहकर्ता

परमानन्द सुहाने

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२१ ई०

तीसरीबार

मूल्य ।)

कवि का परिचय

इस शिवराजभूषण ग्रन्थ से विदित होता है कि भूषण कवि के पिता का नाम रत्नाकर था और कश्यप गोत्री कनौजिया ब्राह्मण यमुनानदी के किनारे त्रिविक्रमपुर (सांप्रत टिकमापुर) ज़िला कानपुर के निवासी थे और भी अनेक ग्रन्थों से मालूम होता है कि इनके पिता नित्य देवीजी के स्थान पर दुर्गापाठ करने जाते थे (देवीजी का स्थान इनके गांवसे एक मील के अन्तर पर था) एक दिन श्री भगवती प्रसन्न होकर चार भक्तों के मुण्ड दिखाकर बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होवेंगे निदान ऐसाही हुआ कि, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और जटाशंकर उपनाम नीलकण्ठ ये चार पुत्र उत्पन्न हुये इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कविहुये शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़ ऐसे पंडित हुये कि इनका नाम प्रलयतक बना रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और बिहारीलाल कवि जिनका लालभोग है संवत् १६०१ तक विद्यमान थे । इन चारों भाइयों का जन्म समय किसी ग्रन्थ से ठीक ठीक निश्चय नहीं होता इससे मैंने यहां नहीं लिखा ॥

भूषणकवि प्रथम राजा छत्रशाल पन्नानरेश के यहां छःमहीने तक रहे तिस पीछे महाराज शिवाजी सुलंकी सितारे गढ़वाले के यहां जाय बड़ा मानपाया और अपनी काव्य माधुर्यता से उस महाराज का मन रंजन कर जब यह कवित्त पढ़ा (इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभपर रावण सुदंभ पर रघुकुल राज हैं। पौन बारिबाह पर शंभु रतिनाह पर त्यों सहस्रबाह पर रामद्विजराज हैं॥ दावा द्रुम दुंडपर चित्ता मृग भुंडपर भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज हैं। तेजतिमि रंसपर कान्ह जिमि कंसपर त्यों मलेच्छबंस पर शेर शिवराज हैं) इसके सुनतेही शिवराज ने पांच हाथी और पच्चीस हजार रुपया ईनाम दिया, इसप्रकार से भूषण जी ने बहुत बार द्रव्य हाथी घोड़े पालकी आदि दान में पाये इन्होंने ऐसे ऐसे शिवराज के कवित्त बनाये कि जिनकी बराबर किसी कवि ने वीर यश नहीं बना पाया। जैसे इनकी काव्य में रौद्र, वीर, भयानक, उपमा, अर्थ गौरव, पदलालित्य और अलंकार का आदर्श होता है वैसे और कवि लोगों की काव्य में नहीं पाया जाता, न कवि की वीर रस पूरित ऐसी कविता है कि जिसको बांचने से नपुंसक को भी शूरत्व आये विना नहीं रहता ऐसे प्रतापी कवि के कवित्त की बराबरी आजतक भाषा काव्य में किसी कवि ने नहीं की निदान जब भूषणजी अपने घर को लौटे तब पन्ना आकर राजा छत्रशाल से

मिले। राजा छत्रशाल ने विचारा कि अब तो शिवराज ने इनको ऐसा धन धान्य दिया है कि हम उसका दशवां भाग भी नहीं देसकते ऐसा सोचकर चलते समय भूषणजी की पालकी का बांस अपने कंधेपर धर लिया। ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेहीहैं भूषणजी बहुत प्रसन्न हो यह कवित्त पढ़ा (राजत अखण्ड तेज छाजत सुयश बड़ो गाजत गयन्द दिग्गजनि हिये शालको। जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुर्जन करत बहुख्यालको॥ साजि सजि गजतुरी कोतल कतार दीन्हे भूषणभनत ऐसो दीन प्रतिपालको। और राजा रावमन एकहू न ल्याऊं अब साहिको सराहौं कि सराहौं छत्रशाल को) और दूसरा यह कवित्त कहा (भुज भुजगेश के वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती देह दारुण दलन के। बख्तर पाखरनि बीच धँसि जात मीन पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के॥ रैया राव चंपति के छत्रशाल महाराज भूषण सकत को बखानि यों बलन के। पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने वीर तेरी बरछीने बरछीने हैं खलन के) और यह दो दोहा बनाय राजा को दे आप घर को आये (इक हाड़ा बूँदी धनी मरद महेवावाल। शालत नौरँगजेब के ये दोनों छत्रशाल १॥ ये देखा छत्ता पता ये देखा छत्रशाल। ये दिल्ली की ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल) थोड़े दिन भूषणजी घर में रह फिर बहुत देशान्तरों में घूम घूम रजवाड़ों में शिवराज

का यश प्रकट करते रहे। पश्चात् इन्होंने विचारा कि शिवाजी का यश कमाऊं के पहाड़ तक फैलाहै या नहीं यह देखने के लिये आप कमाऊं में जाय राजा कमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (उलदत मद अनुमद ज्यों जलधि जल बलहद भीमकद काहू के न आहके। प्रबल प्रचण्ड गण्ड मण्डित मधुप वृन्द विन्द से विलिन्द सिंधु सातहुके थाह के ॥ भूषण भनत झूलि झम्पति झपान झुकी झुकत झुकत झहरात रथ हाल के। मेघ से घमण्डित मजेजदार तेजपुंज गुंजत सो कुंजर कमाऊं नरनाथ के) यह सुन राजा ने सोचा कि कविजी कुछ दान लेना चाहते हैं और हमनें जो सुना था कि शिवराज ने इन्हीं को लाखों रुपया दिया है सो सब झूठ है ऐसा विचारकर, हाथी घोड़े और बहुत सा द्रव्य भूषणजी के आगे किया तब भूषणजी ने कहा कि अब इसकी हम को भूख नहीं है हमतो इसलिये यहां आये थे कि देखें शिवराज का यश यहां तक फैला है या नहीं सो उनका यश यहां तक फैला देख हम बहुत प्रसन्न हुये, ऐसा कह राजा से विदा हो कविराज अपने घरको आये इनके बनाये हुये ये चार ग्रन्थ सुने जाते हैं शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास परन्तु इन चार ग्रन्थों में से तीनका तो पताही नहीं लगता चौथा यह "शिवराजभूषण" महान परिश्रम और द्रव्य खर्च से प्राप्त हुआ है इस ग्रन्थ को कवि ने

संवत् १७३० में श्रीमन्महाराज शिवाजी राव सुलंकी सितारे गढ़वाले का वीर यश वर्णन करके रचाथा परन्तु आज २२० वर्ष इस ग्रन्थ को बने होगये लेकिन किसी महाशय ने आजतक इसको प्रकाशित न किया अब मैं सर्व काव्य रसिकों के निमित्त इस ग्रन्थको शुद्धतापूर्वक प्रकाशित कराताहूं और मैं उन महाशयों से क्षमा मां- गता हूं कि जो प्राचीन काव्यके न छपवाने में अहर्निश तत्पर रहते हैं और छपी हुई पुस्तक देखकर प्रकाशक को अनेकों दुर्वचन कह उठते हैं ॥

आपका कृपाभिलाषी

संग्रहकर्ता

शिवराजभूषण का सूचीपत्र ॥

इति शिवराजभूषण का सूचीपत्र सम्पूर्णम् ॥
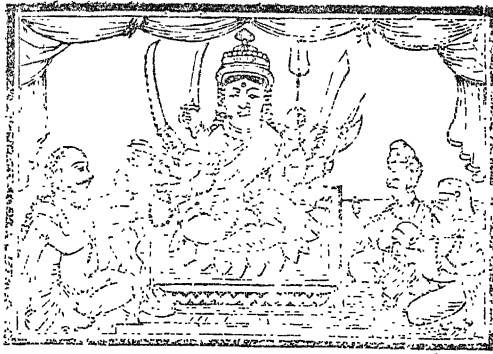
शिवराजभूषण ॥

———:०:———

उपोद्घातछप्पै ॥ जय जयति जय आदि शक्ति जय कालि कपर्दिनि । जय मधुकैटभ छलनि देवि जय महिषबिमर्दिनि ॥ जयचमुण्ड जय चण्ड मुण्ड भण्डासुर खण्डिनि । जय सुरक्त जय रक्तबीज बिण्डाल बिहण्डिनि ॥ जय निशुंभ शुंभदलनि भनि भूषण जयजय भननि । सरजा समर्थ शिवराज कहँ देहिबिजय जयजग-जननि १ ॥ दोहा ॥ तरणि जगत जलनिधि तरणि जैजै आनँद ओक । कोक कोक नद शोकहर लोक लोक आलोक २ राजत है दिनराजको बंश अवनि अवतंश । जामें पुनि पुनि अवतरे कंस मथन प्रभुअंश ३ महाबीर ता बंशमें भयो

एक अवनीश । लियो विरद सीसौदिया दियो ईशको शीश ४ ता कुलमें नृपवृन्द सब उपजे बखत बुलंद । भूमिपाल तिन में भयो बड़ो माल मकरन्द ५ सदा दान किरवानमें जाके आननअम्भ । साहिनिजाम सखा भयो दुर्ग्ग देव गिरिखम्भ ६ याते सरजा विरदभो शोभित सिंह प्रमान । रनभूसिला सुभौंसिला आयुषमान सुमान ७ भूषण भनि ताके भयो भुव भूषण नृपसाहि । रात्यो दिन शंकित रहैं साहि सबै जगमाहिं ८ ॥ कवित्त ॥ एतेहाथी दियेमाल मकरन्दजूके नन्द जेते गनि सकति बिरंचिहू की न तिया । भूषण भनत जाकी साहिबी सभाके देखे लागैं और सब छितिपाल छितिमें छिया ॥ साहस अपार हिंदवानको अधार धीर सकलसिसौदिया सपूत कुलको दिया । जाहिर जहान भयो साहिजू खुमानवीर साहिनको शरण सिपाहिनको तकिया ९ ॥ दोहा ॥ दशरथके जो रामभो श्रीबसुदेव गोपाल । सोईप्रगट्यो साहिके श्री शिवराज भुवाल १० उदित होत शिवराज के मुदित भये द्विजदेव । कलियुग हट्यो मिट्यो सकल म्लेच्छनिको अहमेव ११ ॥ कवित्त ॥

जौदिन जन्म लीन्हों भूपर भूसिलाभूप ताही
दिन जीत्यो अरिउरके उछाहको । छठी छत्र
पतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नाम
करन में करन प्रवाहको ॥ भूषण भनत बाल
लीलागढ़कोट जीते साहिके शिवाजी करित्यों
हूं चक्र चाहको । गोलकुण्डा बीजापुर जीत्यो
लरिकाइहिं में जवानी आये जीत्यो दिल्लीपति
पादशाहको १२ ॥ दोहा ॥ दक्षिणके सब दुर्गजि
ति दुर्गसाह अभिलास । शिवसेवक शिवगढ़पती
कियो राजगढ़वास १३ ॥ राजगढ़वर्णन . सवैया ॥
जापर साहितनै शिवराज सुरेशकी ऐसी सभा
शुभ साजै । यों कवि भूषण जंपति है लखि सं-
पतिको अलकापति लाजै ॥ तामधि तीनिहूं
लोककी दीपति ऐसो बड़ो गढ़राज बिराजै ।
वारि पतालसी माचीमही अमरावतिकी छवि
ऊपर छाजै १४ ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ मणिमयमहल
शिवराजके इमि राजगढ़में राजहीं । [illegible]
किन्नर सु असुर गंधर्व हौसनि साजहीं ॥ उ-
त्तंग मरकत मंदिरन मधि बहु मृदंग यों बाज
हीं । घन समयमानहुं घुमड़िकरि घनघन पटल
गल गाजहीं ॥ मुकतानिकी झालरिन मिलि

मणि लाल छज्जा छाजहीं । संध्या समय मानहुं नखत गन लाल अम्बर राजहीं ॥ जहाँ तहाँ ऊरध उठे हीरा किरण समुदाय है । मानौ गगन तम्बू तन्यो ताके सपेत तनायहै ॥ भूषण भनतजहँ परासि कै मणि पुहुपरागनकी प्रभा । प्रभु पीतपटकी प्रगटपावत सिन्धु मेघनकी सभा ॥ मुख नागरिनके राजहीं कहुँ फटिक महलन संगमैं । लसै अमल कोमल मानहुँ गगन गंग तरंगमैं ॥ आनंद सों सुन्दरिनके कहुँ इन्दु बदन उदोतहै । नभ सरितके प्रफुलित कुमुद कलित कमल कुल होतहै ॥ कहुँ बावली सरकूप राजत बद्धमणि सोपान है । जहँ हंससारस चक्रवाक विहार करत गुमानहै ॥ कितहूं बिशाल प्रबाल जालनि जटित अंगन भूमि है । जहँ ललित बागनि द्रुम लतनि मिलि रहे झिलिमिलि झूमहै ॥ चंपा चमेली चारु चंदन चारिहूं दिशि देखिये । लवली लवंग इलानि केरे लाखहों लगि लेखिये ॥ कहुँ केतकी कदली करौंदा कुन्द अरु करबीर हैं । कहुँ दाख दाड़िम सेब कटहर तूत अरु जंबीरहैं ॥ कितहूं कदम्ब कदम्ब कहुँ हिंताल ताल तमालहैं ।

पीयूषते मीठे फले कितहूं रसाल रसाल हैं ॥ पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकेसरि कितहुं बकुल अशोकहै। कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल पटल बेला थोकहै ॥ कितहूं निवारी माधवी शृंगार हार कहूँ लसैं। जहँ भांति भांतिन रंग रंग बिहंग आनँद सों रसैं १५ ॥ छप्पै ॥ लसत बिहंगम बहुत बहु भांति बाग महँ। कोकिलकीर कपोत केलि कल कल करंत तहँ॥ मञ्जुलमहरि मयूर चटुल चातक चकोर गन। पियत मधुर मकरंद करत झंकार भृंग घन॥ भूषण सुबास फलफूलयुत छहुँऋतु बसत बसंतजहँ। इमिराज दुर्ग राजत रुचिर अतिहिसुखदशिवराजकहँ १६
दोहा ॥ तहां राजधानी करी जीतिसकल तुरकान। शिवसरजा रुचिदान में कीन्होंसुयश जहान १७
देशनि देशनि ते गुनी आवत याचन ताहि। तिनमें आयो एक कवि भूषण कहियतु जाहि १८
द्विज कनौज कुलकश्यपी रत्नाकर सुत धीर। बसत त्रिविक्रमपुर सदा तरणि तनूजा तीर १९
शिवचरित्र लखि यों भयो कवि भूषण के चित्त। भांतिभांति भूषणनिसों भूषितकरौं कबित्त २० सु कबिनहूँकी कृपा कछु समुझि कबिन को पन्थ।

भूषणभूषण सुखकरन शिव भूषण मय ग्रन्थ २१ कुल सुलंख चित्रकूटपति साहस शील समुद्र। कविभूषण पदवीदई हृदय रामसुत रुद्र २२ भूषण सब भूषणनि में उपमैं उत्तम चाहि। याते उपमैं आदिदै। वरणत सकल सराहि २३ ॥

ग्रन्थारम्भ ॥

उपमावर्णन दोहा॥ जहांदुहुँनको देखिये शोभावनतसमान। उपमा भूषण ताहिको भूषण कहत सुजान १ जाको वरणान कीजिये सो उपमेय प्रमान। जाकी सरिवरि कीजिये ताहि कहत उपमान २ ॥

उदाहरण कवित्त॥ मिलतहीं कुरुष चकताको निरखि कीन्हों सरजा सहसज्यों उचित मृगराज को। भूषणको मिसि गैरमिलि लपरे किये को किये म्लेच्छ मुरछित करिके गराजको ॥ अरते गुसल खानेबीच ऐसे उमराय लैचले मनाय महाराज शिवराजको। दावेदारकोलखि रिसानो दीहदल राय जैसे गडदार अडदार गजराज को ३ ॥

सवैया ॥ साइस भिस्त सुयोधन सों औ दुशाशन सों यशवन्त निहार्यो। द्रोणसों भाउ करंण करंण सों और सबै दलसों दलमार्यो ॥ ताहि बिगोइ शिवासरजाभनै भूषण ऐलि फतै सों प-

छाय्यो। पारथके पुरुषारथ भारथ जैसे जगाय जयद्रथ मार्यो ४ ॥ कवित्त ॥ आवही दरबारवि-लसाने छरीदार देखि जापिता करनहार नेकहू न मनके। भूषणभनत भौंसिलाके आगे आइ बाजे भये उमराय जन तुजक करनके ॥ साहि रह्यो जकि शिवसाहिरह्यो तकि और चाहिरह्यो चकि बनें ब्योंत अनबनके। ग्रीषमको भानु सों खुमानको प्रताप देखि हारे समतारे गये मूँदि तुरकनके ५ ॥ अनन्वयवर्णन दोहा ॥ जहां करत उप-मेयको उपमेये उपमान। ताहि अनन्वै कंहतहैं भूषण सब मतिमान ६ ॥ उदाहरण सवैया ॥ साहि तनै सरजा तुव द्वार प्रतीदिन दान कि दुंदुभि बाजै। भूषण भिक्षुक भीरनको अति भोजहुते बढ़ि मौजनि साजै ॥ रावणको गनराजनि को गनसाहिनमें नहिं यों छविछाजै। आजु गरीब निवाज महीपर तोसों तुहीं शिवराज विराजै ७ ॥ प्रतीपवर्णन दोहा ॥ जहँ प्रसिद्ध उपमानको कवि व-रणत उपमेय। तहँ प्रतीप उपमाकहत भूषण गाथ प्रमेय ८ ॥ उदाहरण सवैया ॥ छाइरही जितही तितही अतिही छवि क्षीरधि रंग करारी। भूषण शुद्ध सुधानके सोधनि सोधत सीधरि ओप उ-

ज्यारी। यों तम तोमहिं चाबिकै चन्द्र चहूँदिशि चांदनि चारु पसारी। ज्यों अफजल्लहि मारि महीपर कीरति श्री शिवराज बगारी ९ ॥ दोहा ॥ जहँ बरणत उपमेयते हीनो करिउपमान। तासों कहै प्रतीपहै भूषण सुकवि सुजान १० ॥ उदाहरण सवैया ॥ कुन्द कहाँ पयवृन्दकहाँ अरु चन्द्रकहाँ सरजा यश आगे। भूषण भानु कृशानुकहाँ व खुमान प्रताप महीतल पागे ॥ रामकहाँ द्विज रामकहाँ बलरामकहाँ रन में अनुरागे। बाजकहाँ मृगराजकहाँ अति साहस में शिवराजके आगे ११ यों शिवराजको राजअडोलकियो शिवजोव कहा ध्रुवधूहै। कामना दानि खुमान लखे न कछू दिव बृक्ष न देवगऊहै। भूपन भूपनमें कुल भूषण भौंसिला भूपधरे सबभू है। मेरु कछू न कछू दिगदन्तिन कुण्डलि कोल कछू न कछूहै १२॥ उपमेयोपमावर्णन ॥ जहां परस्पर होत है उपमेयो उपमान। भूषण उपमेयोपमा ताहि बखानत जान १३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ तेरो तेजसरजा समर्थ दिनकर सोहै दिनकर सोहै तेरे तेजके निकर को। भौसला भुवालतेरो यश हिमकर सोहै हिमकर सोहै तेरे यशके अकरसो ॥ भूषण भनत तेरो

हियो रत्नाकर सो रत्नाकरौ है तेरे हिय सुख कर सो। साहिके सपूतशिव साहि दानितेरे करसुर तरु सो है सुरतरु तेरे करसो १४ ॥ मालोपमावर्णन दोहा ॥ जहां एक उपमेयके होत बहुतउपमान। ताहि कहत मालोपमा भूषण सकल सुजान १५॥ उदाहरण कवित्त ॥ इन्द्र जिमि जंभपर बाडव ज्यों अंभपर रावण सुदंभपर रघुकुल राज है। पवन बारिवाहपर शम्भु रतिनाहपर ज्यों सहस्रबाहुँ पर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदुण्डपर चीता मृगभुण्डपर भूषण बितुण्डपर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंसपर त्यों मलेच्छ वंशपर शेर शिवराज है १६॥ ललितोपमावर्णन दोहा॥ जहँ समता को दुहुँन की, लीलादिक पद होत। ताहि कहत ललितोपमा सकल कबिन के गोत १७॥ उदाहरण दोहा ॥ बह-सत निदरत हँसत जहँ छबि अनुसरित बखा-नि। शत्रुमित्र इमि औरऊ लीलादिक पद जानि १८॥ तथा कवित्त ॥ साहितनै सरजा शिवाकी सभा जामधिहै मेरुवारी सुरकी सभाको निदरति है। भूषण भनत जाके एक एक शिखरते केतिक धौन दिनके सोतवे तरति है॥ जोन्ह को हँसति

जोति हीरमनिमान्दिरनि कन्दरनिमैं छबि कुहूकि उघरतिहै । ऐसो ऊँचो दुर्ग महावली है जा में नखतावली सोव हँसि दिपावली धरतिहै १९ ॥
रूपकवर्णन दोहा ॥ जहाँ दुहुँनको भेद नहिं वरणत सुकबि सुजान । रूपक भूषण ताहिको भूषणक-हत प्रमान २० ॥ उदाहरण छप्पै॥ कलियुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उर्मिमय । लच्छनिलच्छ मलिच्छ कच्छ अरु मच्छ मगरचय ॥ नृपति नदी नद बृन्द होत जाको मिलिनीरस । भनि भूषणसब भुम्मि घेरि किन्निय सुअप्पवस ॥ हि-न्दवान पुण्यगाह कवनिक तासु निवाहक साहि सुव । बरदवान किरवान धरि यश जहाज शि-वराजदुव २१ साहिन मनसमरत्थ जासुअव रंग साहि शिरु । हदै जासु अव्वासुसाहिवहल बिलास थिरु ॥ एदल साहि कुतुब्ब जासु भुज युग भूषणभानि । पाइ म्लेच्छ उमराय कायतु-रकान और गनि ॥ यह रूप अवनि अवतार धरि जिहि जालिम जगदण्डियव । सरजाशिव साहस खर्ग गहि कलियुग सोइ खल खंडियव २२ ॥ तथा कवित्त ॥ सिंह धरिजानै बिन जाव ली जंगल भटी हठी गजएदिल पठाइकरि भटक्यो।

भूषण भनत देखि भभरिभगानो सब हिम्मत हिये में धरिकाहुवै न हटक्यो ॥ साहिके शिवाजी गाजी सरजा समत्थं महामद गल अफजलै पंजा बल पटक्यो । ताबिगरहै करि निकामनिज धामकह आकृत महाउतलै आंकुशलै सटक्यो २३ ॥ रूपकभेदवर्णन दोहा ॥ घटिबढ़ि जहँ बर्णन करै करिकै दुहुँन अभेद। भूषणकवि औरौकहत है रूपकको भेद २४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनै शिवराज भूषण सुयश तुव बिगिरकलंक चन्द्र उर आनियतुहै । एकहि आनन पंचआनन गनित तोहिं गजानन बदन बिना बखानियतुहै ॥ एक शीशही सहस शीश कलाकरिबेको दुहूंदग सों सहस दग मानियतुहै। दुहूँ करसों सहस कर मानियतु तोहिं दुहूँ बाहुँसों सहसबाहुँ जानियतु है २५ जेते हैं पहार भुव माह्नि पारावार तिन सुनिकै अपार कृपा गहै सुख फैल है । भूषण भनत साहि तनै सरजाकेपास आइबे को बढ़ी उर हौसनकी ऐलहै ॥ किरवान बज्र सों बिपच्छ करिबेके डर आइ है किते को आये शरण कीगैलहै। मघवा मही में आनि शिव है महि रवान कोटकारि सकल सपच्छकिये शैलहै २६ ॥

परिणामवर्णन दोहा ॥ जहँ अभेद करि दुहुँन सों करत और से काम। भनि भूषण सब कहत है तासुनाम परिणाम २७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ भूषण तीषण तेज तरन्नि सो वैरिन को कियो पानिप हीनो। दारिद दौकरि वारिद सौ दलि त्यों धरणीतल शीतल कीनो ॥ भौसिला भूपबली भुवको भुज भारी भुजंगम सों भरलीनो। साहितनै कुलचन्द शिवा यश चन्द सों चन्द कियो छवि छीनो २८ ॥ उल्लेखवर्णन दोहा ॥ कै बहुतै कै एक जहँ एक बस्तुको देखि। बहुविधि कर उल्लेखहै सो उल्लेखि उलेखि २९ ॥ उदाहरण सवैया ॥ एकै कहै कल्पद्रुमहै इमि पूरति है सबकी चित चाहै। एकैकहै अवतार मनोज को यों तन में अति सुन्दरताहै ॥ भूषण एकै कहै महि इन्दु यों राज विराजत बाढ़्यो महाहै। एकै कहै नरसिंहहै संगर एकै कहै नरसिंह शिवा है ३० ॥ तथा कवित्त ॥ पैज प्रतिपाल भूमि भार को हमाल चहूं चक्कको अमाल भयो दण्डत जहान को। साहिन को साल भयो ज्वार को जवाल भयो हरको कृपाल भयो हारके विधान को ॥ बीर रस ख्याल शिवराज भुवपाल तुव

हाथको बिशाल भयो भूषण बखान को। तेरो करवाल भयो दक्षिणको ढाल भयो हिन्द को दिवाल भयो काल तुरकान को ३१ ॥ स्मृतिवर्णन दोहा ॥ सम शोभा लखि आनकी सुधि आवत जेहि ठौर। स्मृति भूषण तासों कहत भूषण कवि शिर मौर ३२ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ तुम शिव राज ब्रजराज अवतार आज तुमहीं जगतकाज पोषत भरतहौ। तुम्हैं छांड़ि यातें काहि बिनती सुनाऊं मैं तिहारे गुण गाऊं तू ढील क्यों धरत हौ॥ भूषण भनत वह कुल मैं न भयो न गुनाहक छुड़ायो क्यों न चित्तहि हरतहौ। और ब्राह्मननि देखि करत सुदामा सुधि मोहिं देखि काहे सुधि भृगुकी करतहौ ३३ ॥ भ्रमवर्णन दोहा ॥ आन बात को आनमें होत जहाँ भ्रम आनि। तासों भ्रम सब कहत हैं भूषण कवि मत जानि ३४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ पीय पहारनि पास न जाहुँ यों तीय बहादुर सों कह शोषै। कौन बचै है नवाब तुम्हैं भनै भूषण भोसिला भूप के रोषै॥ वान्दि कियो इहो साइस्तखां यशवन्त से भाउ करंन से दोषै। सिंह शिवाजिके वीरन सोगो अमीरनि बांचि गुनीजन घोषै ३५ ॥

संदेहवर्णन दोहा ॥ कै यह कै वह यों जहां होत आनि सन्देह। भूषण सो सन्देह है यामें नहिं सन्देह ३६ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ आवत गोसल खाने ऐसे कछू त्योर ठाने जान्यो अवरंगजू के प्राणनको लेवाहै। रसखोट भये एतै अगोट आगरे में सातै चौकीना कि आइ घरकीन्हीं हद्द रेवाहै ॥ भूषण भनत यह चहूँ चक्क चाह कियो पातशाह चकताकी छाती महछेवा है। जान्यो न परतु ऐसे काम है करतु कोऊ गन्धर्ब देवाहै कै सिद्ध है कि सेवाहै ३७ ॥ अपह्नुतिवर्णन दोहा ॥ आनबात आरोपिये सांची बात दुराइ। शुद्ध अपह्नुति तिहि कहत भूषण सब कबिराइ ३८ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ चमकती चपला न फिरत फिरंगै भट इन्द्रको न चाँप तरु बैरष समाजको। धाये धुरवान छाये धुरके पटल मेघ गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दुबाजको ॥ भौंसिलाके डरनि डरानी रिपुरानी कहै पियभजो देखि उदो पावसकी साजको। घनकी घटान गजघटनि सनाहसाजै भूषण भनत आयो सेन शिवराजको ३९ ॥ हेत्वपह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहाँ जुगति भों आनको कहिये आन छपाइ। हेतु अपह्नुति कहत है

तासों कबि समुदाइ ४० ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिव सरजाके कर लसै सोन होइ किरवान । भुज भुजगेश भुजंगिनी भखति पौन अरि प्रान ४१ ॥ पर्यस्तापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ बस्तु गोइ ताको धरम आन बस्तु में रोपि। पर्यस्तापह्नुति कहत कबि भूषण मति ओपि ४२ ॥ उदाहरण दोहा ॥ काल करत कलिकाल में नहिं तुरकनको काल। काल करत तुरकानको शिव सरजा करबाल ४३ ॥ भ्रांतापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ शङ्क आपनी होत हीं जहँ भ्रम कीजै दूरि । भ्रांतापह्नुति कहत हैं तेहि भूषण कबिभूरि ४४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनै सरजाकी भयसों भगाने भूप मेरुके लुकानेते लहत जाइ ओकहै । भूषण तहाँ ऊ-मर हट पतिके प्रताप पावत नवल अति कौतुक उदोतहै ॥ शिव आयो शिव आयो शंकर के आगमन सुनिकै परान ज्योंलगत अरिगोत है। शिवसरजान यह शिवहै महेश तब योंकैउपदेश यक्ष रक्षकसे होतहै ४५ ॥ तथा सवैया ॥ एक समय सजिकै सब सैन सिकारको आलमगीर सिधा-ये। आवतहै सरजा समस्यो एक ओरते गोलनि बोल जताये ॥ भूषणभो भ्रम औरंगके शिव

भौंसिला रूपकी धाक धुकाये । धाइकै सिंह कह्यो समुझाइकै रौलनिआइ अचेत उठाये ४६॥ छेकापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहां और की शंक करि सांच छपावत बात। छेकापह्नुति कहत हैं भूषण मति अवदात ४७॥ उदाहरण दोहा ॥ तिमिर वंशहर अरुणकर आयो सजनी भोर। शिव सरजा चुपरहि सखी सूरज सुर शिरमौर ४८॥ कैतवापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहँ कैतव छल व्याजमिस इनसों होत दुराव। कहत कैतवापह्नुतिहि भूषण कबि सदभाव ४९॥ उदाहरण दोहा ॥ दुर्ग बलयजन प्रबल सर जा जीत्यो रणमाहिं। औरंग कहै दिवानसों सपन सुनावत काहिं ५० सुनि सुउजीरन यों कह्यो सरजा शिव महराज। भूषण कहि चकता सकुचि नाहिं सिकार मृगराज ५१॥ तथा कवित्त ॥ साहिनके शिक्षक सिपाहिन के पातशाह संगरमें सिंह कैसे जिनके सुभावहैं। भूषण भनत शिव सरजा कीधाकैते वे कांपत रहत चित्त गहत न चावहैं॥ अफजलकी अगति साइस्तखांकी अपति वह लोलकी बिपति सुनि डरे उमराउहैं। पक्का मतौ करिकै मलेच्छ मन सब छोंड़ि मक्काहि के मिसि उतरत दरियाउहैं ५२॥

उत्प्रेक्षावर्णन दोहा ॥ आन बातको आनमें जहँसम्भावन होइ । बस्तु हेतु फलयुत कहत उत्प्रेक्षा है सोइ ५३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ दानव आयो दगा करि जावली दिग्धभयारो महामद भाख्यो । भूषण बाहुबली सरजाहि सुभेटिबेको निरशंक पधाख्यो ॥ बीछूके घायगिरे अफजल्लहि ऊपरही शिवराज निहाख्यो । दाबियों बैठ्यो नरिन्द अरिन्दहि मानो मयन्द गयन्द पछाख्यो ५४ साहि तनै शिव साहि निशामें निशाकलियो गढ़ सिंह सुहानो । राठिवरोको संहार भयो भिरिकै सिरदार गिख्यो उदै मानो ॥ भूषण यों घमसान भो भूतल घेरत लोथनि मानो मुहानो । ऊंचे सुछज्ज छता उचटी प्रकटी परभा परभात की जानो ५५॥ तथा कवित्त ॥ दुर्जनदार भजि भजिबे सम्हार चढ़ी उत्तर पहार डरि शिवाजी नरिन्द ते । भूषण भनत बिन भूषण बसन सबै भूषण पियासवहै नाहनिके निन्दते ॥ बालक अयानै बाट बीचही बिलानै कुम्हिलानै मुख कोमल अमल अरबिन्दते । दृग जल कज्जल कलित बढ़यो मानो दूजो सोतत तरनि तन जाको कलिन्दते ५६ ॥ तथा दोहा ॥ महाराज शिवराज

तुव सुधा धवल धुव कित्ति । छबि छटानि सौं छुहतिसी छिति अंगन दिग भित्ति ५७ ॥ तथा कवित्त ॥ लूट्यो खान दौरा जोरावर सफजंग अरु लह्योकार तलबखां मनहुँ अमाल है । भूषण भनत लूट्यो पूनामें साइस्तखान गढ़नि में लूट्यो त्यों गढ़ोइनि को जाल है ॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार घेरि घेरि लूट्यो सब कटक कराल है । मानो हय हाथी उमराव करि साथी अवरंग डरि शिवाजी पै भेजत रसालहै ५८ ॥ तथा दोहा ॥ दुवन सदन सब के बदन शिव शिव आठों याम । निज बचिबे को जपत जनु तुरुकौ हरकौ नाम ५९ ॥ उत्प्रेक्षागनि गुपति वर्णन दोहा ॥ मानो इत्यादिक बचन आवत नहिं जिहि ठौर । उत्प्रेक्षागनि गुपति सों भूषण भनत अमोर ६० उदाहरण कवित्त ॥ देखत उचाई उदरात पाग सूधी राह धौसहू मैं चढ़े ते जे साहस निकेतहै । शिवाजी हुकुम तेरो पाइ पैदल निसल हेरि परना लैसे जीते जनु खेतहै ॥ सावन भादौंकी भारी कुहूकी अँध्यारी चाढ़ि दुर्ग पर जात मावलावल सचेतहै । भूषण भनत ताकी बातमैं बिचारी तेरे परताब रबिकी उज्यारी गढ़ लेतहै ६१

तथा दोहा ॥ और गढ़ोई नदी नद शिव गढ़ पाल दरयाव। दौरि दौरि चहुँ ओरते मिलत आनि यह भाव ६२ ॥ रूपकातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ ज्ञान करत उपमेयको जहँ केवल उपमान। रूपकातिशयोक्ति तहँ भूषण कहत सुजान ६३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ बासवसे बिसरत बिक्रमकी कहा चली बिक्रम लखत बीर बखत बिलन्दके। जाके तेज बृंद शिवाजी नरिंद मसरंद माल मकरंद कुलचंद साहिनंदके ॥ भूषण भनत जाके बैर बैर नैरनि मैं होत अचरज घर घर दुखदंदके। कनक लतानि इन्दु इन्दुनि मैं अरबिंद झरै अरिबिंदनितै बुन्द मकरंदके ६४॥ भेदकातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहँ जहँ आनहिं भांति के बरणै बात कछूक। भेदकातिशयोक्ति सो भूषण कहत अचूक ६५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ श्रीनगर नयपाल जुमिलाके क्षितिपाल भेजत रसाल चोर गढ़ कुही बाजकी। मेवार ढूंढार मारवार औ बुंदेलखंड झारखंड बांधौ धनी चाकरी इलाजकी। भूषण जे पूरब पछाहँ नरनाहते वै ताकत पनाह दिल्लीपति सिरताजकी। जगतको जेतवार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी

रीति भूतल निहारी शिवराजकी ६६ ॥ अक्रमातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहाँ हेतु अरु काज मिलि होत एकही साथ। अक्रमातिशयोक्ति सो कहि भूषण कबिनाथ ६७॥ उदाहरण कवित्त ॥ उद्धत अपार तुव दुंदुभीधुकार साथ लंघै पारावार बृन्द बैरी बालकनके। तेरे चतुरंग के तुरंगन के रंगे रज साथही उड़ात रज पुंज है परन के॥ दक्षिण के नाथ शिवराज तेरे हाथ चढ़ै धनुष के साथ गढ़ कोट दुर्जनके। भूषण असीसै तोंहिं करत कसीसै पुनि बाणनके साथ छूटैं प्राण तुरकनके ६८॥ चंचलातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहां हेतु चरचाहि में काज होत ततकाल। चंचलातिशयोक्ति सो भूषण कहत रसाल ६९॥ उदाहरण दोहा ॥ आयो आयो सुनतही शिवसरजा तुव नाउँ। बैरि नारि दृग जलनि सों बूड़िजात अरिगाउँ ७०॥ अत्यन्तातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहां हेतुते प्रथमहीं प्रकट होतहै काज। अत्यंतातिशयोक्तिसो कहि भूषण कबिराज ७१॥ उदाहरण कवित्त ॥ मंगन मनोरथ के दानि प्रथमहिं तोहिं कामतरु कामधेनु सो गनाइयतु है। याते तेरे गुण सब गाइ को सकतु कबि बुधिअनुसार कछु

हम गाइयतुहै ॥ भूषणकहै यों साहितनय शिव-
राज निज बखत बढ़ाइ करि तोहिं ध्याइयतुहै ।
दीनता को डारि औ अधीनता बिडारि दीह
दारिद को मारि तेरे द्वार आइयतुहै ७२ ॥ तथा
दोहा ॥ कबि तरवर शिव सुयश सर सींचे अच-
रज मूल । सफल होत है प्रथमहीं पाछे प्रकटै
फूल ७३ ॥ सामान्यविशेषवर्णन दोहा ॥ कहिबे जहँ
सामान्यहै कहै जहाँ जु बिशेष । सो सामान्य
बिशेषहै बरणत सुकबिअशेष ७४ ॥ उदाहरण दोहा ॥
और नृपति भूषण कहै करै न सुगमौ आज ।
साहि तनय शिवसुयशको करै कठिनऊ काज
७५ ॥ तुल्ययोग्यतावर्णन दोहा ॥ तुल्ययोग्यता धरम
जहँ बर्णनको है एक । कहूँ अबर्णनको कहत
भूषण सुकबि बिवेक ७६ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ च-
ढ़त तुरंग चतुरंग साजि शिवराज चढ़त प्र-
ताप दिनकर अतिजंगमैं । भूषणचढ़त मरहट्टनि
के चित्तचाव खड्ग खुलि चढ़तहै अरिनके अंग
मैं ॥ भोसिलाके साथ गढ़कोट है चढ़त अरि
जोटहै चढ़त एक मेरु गिरिशृंग मैं । तुरकान
गण ब्योमजान है चढ़त बिना मन है चढ़त
बदरंग अवरंगमैं ७७ ॥ तथा दोहा ॥ शिवसरजा

भारी भुजानि भुवभर धस्यो सुभाग । भूषण अब निहचिंतहैं शेषनाग दिगनाग ७८ ॥ दीपकवर्णन दोहा ॥ वर्ण्य अवर्ण्यनको धरम जहँ वरणतहैएक। ताको दीपक कहत हैं भूषण सुकवि विवेक ७९ ॥ उदाहरणसवैया ॥ कामिनि कंथसों यामिनि चन्दसों दामिनि पावस मेघ घटासों । कीरति दानसों सूरति ज्ञानसों प्रीतिबड़ी सनमान महासों॥ भूषण भूषणसों तरुनी नलिनी नव पूषण देव प्रभासों । जाहिर चारिहूं ओर जहान लसै हिंदवान खुमान शिवासों ८० ॥ आवृत्तदीपकवर्णन दोहा ॥ दीपक पदके अर्थ जहँ फिरि फिरि कहत बखान । आवृत दीपक कहत हैं भूषण कविमत जान ८१ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अटल रहे हैं दिग्ग अन्तनिके भूपधरि रैयतिको रूप निज देश पेश करिकै । राना रह्यो अटल बहानाधरि चाकरीको बाना तजि भूषण भनत गुण भरिकै ॥ हाड़ा राठौरहे कच्छवाहे गोर और रहे अटल चकत्ताकीचमाऊ धरि डरि कै । अटल शिवाजी रह्यो दिल्लीको निदरि धीर धरि ऐड़ धरि तेग धरि गढ़ धरिकै ८२ ॥ तथा सवैया ॥ मद जल धरन द्विरदबल लागत बहु जल धरन

जलद छवि साजई । भूमि धरन फणपति बि-
लसत अति तेज धरन ग्रीषम रबि छाजई ॥
खड्ग धरन शोभा तहँ राजत रुचि भूषण गुन
धरन समाजई । दिल्लि दलन दक्षिण दिशि
थम्भन ऐड़ धरन शिवराज बिराजई ८३ ॥
प्रतिवस्तूपमा वर्णन दोहा ॥ वाक्यनको युग होत जहँ
एकै अर्थ समान। जुदो जुदो करि भाषिये प्रति
वस्तूपमा जान ८४ ॥ उदाहरण सवैया॥ देत तुरी
गुनगीत सुने बिन देत करी गुन गीत सुनाये।
भूषण भावत भूप न आन जहाँ न खुमानकी
कीरति गाये ॥ मङ्गनको भुवपाल घनै पै नि-
हाल करै शिवराज रिझाये । और रितै बरसै
सरसै पै वढ़ै नदिया नद पावस आये ८५ ॥ दृष्टांत
वर्णन दोहा ॥ पदसमूह युग अर्थ जहँ प्रतिबिम्बित
सो होत । ताहि कहत दृष्टांत है भूषण सुमति
उदोत ८६ ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिवा औरंगहि
जिति सकै और न राजाराउ । हथ्थ मथ्थ पर
सिंह बिनु और न घालै घाउ ८७॥ चाहत नि-
र्गुण सगुणको ज्ञानवन्त गुण धीर। यही भांति
निर्गुण गुणिहि शिवा निवाजत बीर ८८ ॥
निदर्शनावर्णन दोहा ॥ सदृश वाक्य युग अरथ को

करिये एक अरोप। भूषण ताहि निदर्शना कहत बुद्धिदै ओप ८९ ॥ उदाहरण सवैया ॥ मच्छहुकच्छ में कोल नृसिंह में बावनमें भनि भूषण जो है। जो प्रशुराममें जो रघुराम में जोव कह्यो बलरामहुको है ॥ बौधमें जो अरु जो कलकी महँ बिक्रमहूबेको आगे सुनो है। साहस भूमि अधार सोई अब श्री सरजा शिवराज में सो हैं ९० ॥ तथा दोहा ॥ औरनिको जो जनमुहै सो जाको यक रोज। औरनिको जो राज सो शिव सरजा की मौज ९१ साहिन सों रनमांड़िकै कीन्हों सुकबि निहाल। शिव सरजा को ख्याल है औरनिको जंजाल ९२ ॥ व्यतिरेक वर्णन दोहा ॥ समछबि वाले दुहुँनिमैं जहँ बर्णत बाढ़ि एक। भूषण कबि कोबिद सकल ताहि कहत ब्यतिरेक ९३ ॥ उदाहरण छप्पै ॥ त्रिभुवन मैं परसिद्ध एकु अरि बलि वह खण्डिय। यहि अनेक अरिबल बिहंडि रण मण्डल मण्डिय॥ भूषण वह ऋतुएक पुहुमिपानि यहि बढ़ावत। यह छहुँ ऋतु निशि दिन अपार पानिय अधिकावत ॥ शिवराज साहि तुव सथ्थ नित लक्ख हथ्थि हय लक्ख रइ। यकहि गयंद यकहि तुरंग किमि सुरेंद्र सरिवर करइ ९४

सहोक्तिवर्णन दोहा ॥ वस्तुनिको भाषत जहां जन रंजन सहभाय। तहां सहोक्ति कहत हैं कबिकोविद समुदाय ९५॥ उदाहरण कबित्त ॥ छूटत उलास आम खास एकसंग छूटे हरम शरम एकरंग बिनु ढंगही। नैनके नीर छूटे या एक संग छूटे सुख मुख रुचि त्योंही बिनुरंगही॥ भूषण बखाने शिवराज मरदाने तेरे धांक बिललाने न गहत बल अंगही। दक्षिणके सूबा पाइ दिल्लीके अमीर तजे उत्तरकी आश जीव आश एक संगही ९६॥ विनोक्तिवर्णन दोहा ॥ प्रस्तुत जहँ कछु वात बिन हेतु बरार्यको होइ। ताहि कहत बिनोक्ति है भूषण कबि मत जोइ ९७॥ उदाहरण सवैया ॥ को कबिराज बिभूषण होत बिनाकवि साहि तनै को कहाये। को कबिराज समाजित होत सभा सरजाके बिना गुण गाये॥ को कबिराज भुवालनि भावतु भौसिलाके मनमें बिन भाये। कोकबिराज चढ़ै गजराज शिवाजीकी मौज महीबिनु पाये ९८॥ तथा दोहा ॥ शोभामान परजग किये सरजा शिवा खुमान। साहिन सो विन डर अगड़ बिन गुमान को दान ९९॥ समासोक्तिवर्णन दोहा ॥ बर्णन कीजे आन को ज्ञान आन को

होय । कहत समासोक्ति सो भनि भूषण सबकोय १०० ॥ उदाहरण दोहा ॥ बड़ो डील लखि पील को सबनि तज्यो बन थान । धनि सरजा तुव जगत में ताको हर्‌यो गुमान १०१ तुही सांच द्विजराज है तेरी कला प्रमान । तो पर शिव किरपा करी जानों सकलजहान १०२ ॥ परिकर और परिकरांकुर वर्णन दोहा ॥ साभिप्राय बिशेषणनि भूषण परिकर जानि । साभिप्राय बिशेष तै परिकरांकुर मानि १०३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ बचैगान समुहाने बहलोलखां अयाने भूषण बखानै दिलआनि मेराचरजा । तुझते सवाई तेरा भाई सलहेर पासबन्दे किया साथका न कोई बीर गरजा । साहिनको साहसी औरंगके लीन्हें गढ़ जिसका तू चाकर सो जिसकी है परजा । साहिका ललन अफजलका मलन दिल्लीदलका दलन शिवराज आया सरजा १०४॥ तथा दोहा ॥ शूराशिरोमणि शूर कुल भूषण शिवमकरन्द । क्यों करिकै औरंगजितै कुलमलेच्छ कुलचन्द १०५ भूषण भनि सबही तबहिं जीत्यो हो जुरिजंग । क्यों जीततु शिवराज सौ अब अधेक अवरंग १०६ ॥ श्लेषवर्णन दोहा ॥ एकबचनमें होतजहँ बहुअर्थनिको

ज्ञान। श्लेषकहत हैं ताहिको भूषण सकल सु-
जान १०७ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ सीतासंग सोहति
लक्ष्मण सहायजाको भूप भरत नाम भाई नीति
चारुहै। भूषण भनत कुल सूरकुलभूषणहै दाश-
रथी सबजाके भुजभुवभारु है ॥ अरिलङ्क तोर
जोरजाकेसाथबानरहैं सिंधुरहै बांधेजाके दलको
न पारुहै। तेगाहिकै भेंट जो न राकस मरद जान्यों
सरजा शिवाजी रामहीको अवतारुहै १०८
देखत सरूपको सिहात न मिलन काज जग
जीतिबे को जामें रीति छलबलकी। जाके पास
आवै ताहि निधर करत बेगि भूषण भनत जाकी
संगति न फलकी ॥ कीरति कामिनी राच्यो
सरजा शिवाको एक बसकै न बस करनी सकल
की। चंचल बरस एक काहू पैन रहै दारी तिनुका
समान सूबादारी दिल्ली दलकी १०९ ॥ अप्र-
स्तुतप्रशंसावर्णन दोहा ॥ प्रस्तुति लीन्हें होइ जहँ अ-
प्रस्तुत परशंस। अप्रस्तुत परशंस सो कहत
सुकबि अवतंस ११० ॥ उदाहरण दोहा ॥ हिन्दुनि
सों तुरकिनि कहै तुमको सदा संतोष। नाहिंन
तिहारे पतिन पर शिवसरजा को रोष १११
अरितिय भिल्लिन सों कहै घन बनजाइ यकंत।

शिवसरजा सो बैर नहिं सुखी तिहारे कंत ११२॥ पर्यायोक्तिवर्णन दोहा ॥ वचननकी रचना जहाँ बर्णनीय परजानि । पर्यायोक्ति कहत हैं भूषण ताहि बखानि ११३॥ उदाहरण कवित्त ॥ महाराज शिवराज तेरे बैर पोखियतु घन बन ह्वै रहे हरम हबसीनके । भूषण भनत तेरे बैर दामनगरज वार पर बाहबहे रुधिर नदीनके॥ सरजा समर्थ बीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बैयरानिकर चीन्ह न चुरीन के। तेरे बैर देखियतु आगरे दिल्ली में बिनुसिन्दुरके बिन्दुमुख इन्दु जवनीनके ११४॥ व्याजस्तुतिवर्णन दोहा ॥ निन्दा में स्तुति कहत जहँ स्तुति में निन्दा होइ । व्याजस्तुति तासों कहत भूषणकबि सब कोइ ११५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ पीरी पीरी हुन्नै तुम देत हौ मँगाय हमैं सुवरणहमसों परखि करि लेतहौ । एकपलही में लाखैं रुखनि सों लेत लोग तुम राजा ह्वैकै लाखैं दीबेको सचेतहौ ॥ भूषण भनै यों महाराज शिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाये कौन हेतहौ। रीझि हँसि हाथी हम सब कोऊ देत कहा रीझकर हाथी एक तुमहीं तौ देत हौ ११६ तूतौ रात्योदिन जगजागत रहत ओऊ जागत रहत रात्यो दिन

बनरत हैं। भूषण भनत तू बिराजै रज भस्यो ओऊ रज भरे देहनि दरी में बिचरत हैं॥ तूतौ शूरगण को बिदारि बिहरत सूर मंडलै बिदारि सुरलोक बिहरतहैं। काहेते शिवाजी गाजी तेरोई सुयश होत तोसों अरि बर सरि वर सी करत हैं ११७॥ आक्षेपवर्णन दोहा॥ पहिले कहिये बात कछु तासौं पुनि प्रतिषेध। ताहि कहत आक्षेपहैं भूषण सुकबि सुमेध ११८॥ उदाहरण सवैया॥ जाइभिरौ न भिरै बचिहौ भनै भूषण भौसिला भूपशिवासौं। जाइ दरी न दुरौ दबियो तजिकै दरिया उलँघौ लघुतासौं॥ सीछनकाज उजीरन को कढ़े बोलयों आदिल साहि सभासौं। छूटि गयो तो गयो परनालो सलाहकी राहगहौसिरजा सौं ११९॥ विरोधवर्णन दोहा॥ द्रव्याक्रिया गुन मैं जहाँ उपजत काज बिरोध। तासों कहत बिरोध हैं भूषण सुकबि सुबोध १२०॥ उदाहरण सवैया॥ श्रीसरजा शिव तो जस सेत सो होतहै साहिन के मुखकारे। भूषण तेरे अरुन्नप्रताप सपेद लखे कुनरा नृपसारे॥ साहितनै मुखकोप अगिन्न सौं बैरी जरै सब पानिपवारे। एक अचंभव होत बड़ो तिन ओटगहे अरिजात न जारे १२१॥

विरोधाभासवर्णन दोहा ॥ जहँ बिरोध सौ जानिये सांच बिरोध न होइ । ताहि बिरोधाभास कहि बरणत हैं सब कोई १२२ ॥ उदाहरण सवैया ॥ दक्षिण नायक एक तुहीं भुव भामिनिको अनुकूल ह्वै भावै । दीनदयाल न तोसों दुनी अरु म्लेच्छ के दीनहिं मारि मिटावै ॥ श्री शिवराज भनै कवि भूषण तेरे स्वरूपही कोउ न पावै । सूरके बंश में सूर शिरोमणि ह्वै करि तू कुलचन्द्र कहावै १२३ ॥

विभावनावर्णन दोहा ॥ भयो काज बिन हेतहू बरणै हैं जिहि ठौर । तहँ बिभावना होति है भाषत कबिशिरमौर १२४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतनको गनु भारो । भूषण आइ तहां शिवराज लियोहरि औरंगजेब को गारो ॥ दीन्हों कुब्जाव दिलीपतिको अरु कीन्हों वजीरनको मुँह कारो । नायो न माथहि दक्षिण नाथ न साथमें सेन न हाथ हथ्यारो १२५ ॥

तथा दोहा ॥ साहितनय शिवराजकी सहज टेव यह ऐन । अनरीझे दारिद हरै अनखीझे अरि सैन १२६ ॥ द्वितीयविभावनावर्णन दोहा ॥ जहां प्रगट भूषण भनत हेतु काजते होइ । सो बिभावना औरऊ कहत सयाने लोइ १२७ ॥ उदाहरण

दोहा ॥ अचरज भूषण मन बढ़्यो श्री शिवराज खुमान। तुव कृपान ध्रुव धूमते भयो प्रताप कृसान १२८ ॥ असम्भववर्णन दोहा ॥ अनहूवेकी बात कछु प्रकट भई सो जानि । जहां असंभव बरणिये सोई नाम बखानि १२९ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ जसन के रोज यों जलूस गहि बैठ्यो जोव इन्द्र आवै सोई लागै औरँगकी परजा । भूषण भनत तहँ गरज्यो शिवाजी गाजी जिनको तुजकु देखि को न हिये लरजा ॥ ठान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम धूम धाम कै न मान्यो रामसिंह हूको बरजा । जासों ऐंड़करे भूपबचै न दिगंत ताके दन्त तोरि तखत तरेतें आयो सरजा १३० ॥ तथा दोहा ॥ औरँग यों पछिताय मन करतो यतन अनेक । शिवा लेइगो दुर्ग सब को जानै निशिएक १३१ ॥ असंगतिवर्णन दोहा ॥ हेतु अनतही होत जहँ काजु अनतही होइ । ताहि असंगति कहत हैं भूषण सुमति समोइ १३२॥ उदाहरण कवित्त ॥ महाराज शिवराज चढ़त तुरंग पर ग्रीवा जातनैकर गनीम अतिबल की। भूषण चलत सरजा की सैन भूमिपर छाती दरकाति खरी अखिल खलन की ॥ कियो

दौरि घाव अमीर उमराउ पर गई कटि नाक सगरेई दिल्ली दलकी । सूरति जराई कीन्हों दाहु पातसाहउर स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी १३३ ॥ विषमवर्णन दोहा ॥ कहाँबात यहकहाँ वह यों जब करंत बखान । ताहि विषम भूषण कहत भूषण सुकबि सुजान १३४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ जाबालि बार सिंगार पुरी औ जवारि को रामके नैरिको गाजी । भूषण भौंसिला भूपति नै सब मारि यों दूरि किये जिमि पाजी ॥ बैर कियो सरजासों खवासखां क्यों उरसैन बिजैपुर बाजी । बापुरो आदिल साहि कहां कहां दिल्लीको दावनगीर शिवाजी १३५ लैपरना लौ शिवा सरजा करनाटकलौ सब देश बिगूचे । बैरिनके भगे बालक बृन्द भनै कबि भूषण दूरि पहूँचे ॥ नांघत नांघत घोर घने बनहारि परे यों कटे मनो कूंचे । राजकुमार कहां सुकुमार कहां बिकरार पहार वै ऊँचे १३६ ॥ समवर्णन दोहा ॥ जहां दुहूँ अनुरूप को करिये उचित बखान । सम भूषण तासों कहत भूषणसकल सुजान १३७॥ उदाहरण सवैया ॥ पञ्ज हजारिनबीच खराकिय मैं उसका कछू भेद न पाया । भूषण

यों कहि औरँगजेब उजीरन सों सुहिसाबुरि-साया ॥ कम्मर की न कटारिदई इसलामने गोसलखानबचाया। जोर शिवा करता अनरथ्य भली हुइ हथ्य हथ्यार न आया १३८ ॥ दोहा ॥ कछु न भयो केतो ठयो हाय्यो सकल सिपाह। भलीकरै शिवराजसों औरँगकरै सलाह १३९ ॥ विचित्र वर्णन दोहा ॥ जहां कहत हैं यतन फल चित्त चाहि बिपरीत। भूषण ताहि विचित्र कहि बरणत सुकबि सुप्रीत १४० ॥ उदाहरण दोहा ॥ तेजै सिंहहि गढ़दये शिव सरजा यश हेत। लीन्हे कैयों बरष में बार न लाई देत १४१ ॥ प्रहर्षण वर्णन दोहा ॥ जहँ मनबांछित अर्थते प्रापति कछु अधिकाइ। ताहि प्रहर्षण कहत हैं भूषण जे कबिराय १४२ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनय सरजाकी कीरति सो चारो ओर चांदनी बितान क्षिति छोर छाइयतु है। भूषण भनत ऐसो भूपति भौंसिलाको है जाके द्वार भिक्षा सदाई भाइयतुहै ॥ महादानी शिवाजी खुमानजी जहान पर दानके प्रमान जाके यों गनाइयतु है। रजतु की हौस किये हेम पाइयतु जासों हयनिकिहौस किये हाथी पाइयतुहै १४३ ॥ विषादन वर्णन ॥ जहँ

चितु चाहे अरथको उपजे काज विरुद्ध। ताहि विषादन कहत हैं भूषण बुद्धि विबुद्ध १४४॥ उदाहरण सवैया ॥ दारहि मारि मुराद को बांधि कै संगस्साह सुजा बिचलाये। भूषण कै बसि दिल्लिकि दौलत औरउ देशघने अपनाये॥ बैर कियो सरजा शिवसों यक औरँग के न भये मन भाये। फौज पठाइहुती गढ़लेनको गांठिहुकेगढ़ कोटगँवाये १४५॥ दोहा॥ महाराज शिवराज तुव बैरीतजिरसरुद्र। बचिबे को सागर तिरे बूड़ेशोक समुद्र १४६॥ अधिक वर्णन दोहा॥ जहां बड़े आधारते वरणत बढ़ि आधेय। ताहि अधिक भूषण कहत जानि सुगाह प्रमेय १४७॥ उदाहरण दोहा॥ शिवसरजा तुव हाथको नहिं बखान करि जान। जाको बासी सुयश सब त्रिभुवन में न समान १४८॥ अन्योन्य वर्णन दोहा॥ अन्योन्या उपकार जहँ यह बर्णन ठहराइ। ताहि अन्योन्या कहतहैं अलंकार कबिराइ १४९॥ उदाहरण सवैया॥ तो करसों क्षिति छाजत दान है दानहुसों अति तो कर छाजै। तैंहि गुणी कि बड़ाइ सजै अरु तेरि बड़ाई गुणी सबसाजै॥ भूषण तोहिंसों राज बिराजत राज सों तू शिवराज बिराजै। तो बल

सों गढ़ कोट गजै अरु तू गढ़ कोटनि के बल गाजै १५० ॥ विशेष वर्णन दोहा ॥ बरणतहैं आधेय को जहँ बिनहूँ आधार। ताहि बिशेष बखानहीं भूषण कबि सरदार १५१ ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिव सरजा सों जंग जुरि चन्द्रावत रजवन्त। राउ अमरगो अमरपुर समर रहो रजतन्त १५२ ॥ व्याघात वर्णन दोहा ॥ और काज करता जहां करै औरई काज। ताहि कहत व्याघातहैं भूषण कबि शिरताज १५३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ ब्रह्मरचै पुरुषोत्तम पोषत शंकर सृष्टि सँहारनहारे। तू हरि को अवतार शिवानृपकाज सवाँरै सबै हरिवारे ॥ भूषण यों अवनी जवनी कहै कोउ कहै सरजासों हहारे। तू सबको प्रतिपालनहार बिचारे भतार न मारे हमारे १५४ ॥ गुंफ वर्णन दोहा ॥ पूरुब पूरुब हेतुकै उत्तर उत्तर हेत। या बिधि धारा बरण कबि गुंफ कहत बानेत १५५ ॥ उदाहरण सवैया ॥ शंकर की किरपा सरजापर जोर बढ़ी कबि भूषण गाई। ता किरपासों सुबुद्धि बढ़ी भुव भौंसिला साहि तनैकी सवाई ॥ रोज सुबुद्धि सों दान बढ़्यो अरु दान सों पुण्य समूह सदाई। पुण्यसों बाढ्यो शिवाजी खुमान खुमानसों बाढ़ि

जहान भलाई १५६ ॥ दोहा ॥ सुयश दान अरु दान धन धन उपजै किरवान । सो जग में जाहिर करी सरजा शिवा खुमान १५७ ॥ एकावली वर्णन दोहा ॥ प्रथम बरणि जहँ छोड़िये जहां अरथ की पांति । बरणत एकावलि अहै कविभूषण यहि भांति १५८ ॥ उदाहरण हरिगीतछन्द ॥ तिहुँ भुवन में भूषण भनै नरलोक पुण्य कि साज में । नरलोक में तीरथलसैं महितीरथों कि समाज में ॥ महिमा बड़ी महिमें भली महिमै महारजं लाजमें । रज लाज राजति आजु है महराज श्रीशिवराज में १५९ ॥ मालादीपक और सार वर्णन दोहा ॥ दीपक एकावलि मिले मालादीपक होइ । उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत है सोइ १६० ॥ उदाहरण मालादीपकका कवित्त ॥ मन कविभूषण को शिवकी भगति जीत्यो शिव की भगति जीती साधुजनसयानै । साधुजन जीते या कठिनकलिकाल कलिकालजीते महावीर राजनि महिमानै ॥ जगतमें जीते महाबीर महाराजनि ते महाराज बावनहूँ पातसाहि लेवानै । पातसाहि बावनौ दिल्ली के पातसाहि दिल्ली पातसाहि हिन्दुपति पातसाहि शिवानै १६१ ॥ उदाहरण

सारका सवैया ॥ आदि बड़ी रचनाहै बिरंचि कि जामें रह्यो रचि जीवजड़ो है। ता रचना में सुजीव बड़ो अति काहेते ताउर ज्ञान गड़ो है॥ जीवनि में नरलोक बड़ो कबि भूषण भाषत पैज अड़ो है। हैं नरलोक में राजबड़े सब राजनि में शिवराज बड़ो है १६२॥ यथासंख्य वर्णन दोहा॥ क्रमसों कहि तिलके अरथ क्रमसों बहुरि मिलाइ। यथासंख्य तासों कहत भूषण जे कबिराइ १६३॥ उदाहरण कवित्त॥ जेई चहौ तेई गहौ सरजा शिवाजी देश सबै दले दुवनहते बड़े उरके। भूषण भनत भौंसिला सों अब सनमुख कोऊ ना लड़ैया है धरैया धीरधुरके॥ अफजल खानऊ सामैत मान फत्तेखान कूटेलूटे जूटे जे वजीर बीजापुर के। अमर सुजान मोहकम बहलोल खान खांड़े छांड़े डांड़े उमराय दिलीसुर के १६४॥ पर्यायवर्णन दोहा॥ जहां अनेकनि में रहै आखिर ह्वै करि एक। ताहि कहत पर्यायहैं भूषण सुकबि बिबेक १६५॥ उदाहरण दोहा॥ जीति रही अवरंग में सबै छत्रपति छांड़ि। तजि ताहू को अब रही शिवसरजा करमांड़ि १६६॥ कवित्त॥ कोटगढ़ दैकै माल मुलुक में बीजापुरी

गोलकुंडावारो पीछेहीको सरकतु है । भूषण भनत भौंसिला भुवाल भुजबलरेवाहीके पार अवरंग हरकतु है ॥ पेस कसे भेजत ईरान फिरंगान पति उनहूं को उर याकी धाक धरकतु है । साहि तनै शिवाजी खुमान या जहानपर कौने पातसाह के न हिये खरकतु है १६७ ॥ परिवृत्ति वर्णन दोहा ॥ एकबात को दै जहां आन बातको लेत। ताहि कहत परिबृत्ति हैं भूषण सुकबि सुचेत १६८ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ दक्षिण बरन धीरधरन खुमानगढ़ लेतगढ़ धरनि सों धरमु दुवारु दै । साहि नरनाहको सपूत महाबाहु लेत मुलुक महान छीनि साहिन को मारु दै ॥ संगरमें सरजा शिवाजी अरिसैननि को सारुहरिलेत हिंदुवान सरसारु दै । भूषण भौंसिला जय यशके पहारलेत हरजू को हारु हरगन को अहार दै १६९ ॥ परिसंख्यावर्णन दोहा ॥ अनत बरजि कछु बस्तुजहँ बरणत एकहि ठौर। ताहि कहत परिसंख्य हैं भूषण कबि दिलदौर १७० ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अतिमतवारे जहां द्विरदै निहारियतु जहां तुरंगन मेंही चंचलाई परकीति है । भूषण भनत जहां परलगै बानानि में कोक पक्षिनिही

माहँ बिछुरन रीतिहै ॥ गुणिगण चोर जहां एक चित्तही के लोक बन्धै जहँ एक सरजा की गुण प्रीति है। कंपु कदली में बैरबृक्ष बदली में शिव राज अदली के राजमें यों राजनीति है १७१॥ विकल्प वर्णन दोहा ॥ कै यह कै वह कीजिये जहँ कहनाउति होइ। ताहि बिकल्प बखानहीं भूषण कबि सब कोइ १७२॥ उदाहरण सवैया ॥ मोरंगजाहु कि जाहु कुमाँउ शिरीनगरैहु कबित्त बनाये। बांधव जाहु कि जाहु अमेर कि जोधपुरै कि चितौरहि धाये॥ जाहु कुतुब्ब किए दल पै कि दिलीशहुपै किमि जाहु बुलाये। भूषण गाइ फिरो माहिमें बनिहै चितचाह शिवाहि रिझाये १७३॥ देशनि देशनि नारि नरेशनि भूषण यों सिखदेहि दयासों। मंगन होमन दंत गहो तिन कन्त तुम्हैं है अनन्त महासों॥ कोट गहौ कि गहौ बनओट कि फौज कि जोट सहौ प्रभुतासों। और करो किनकोट कराह सलाह बिना बचिहौ न शिवासों १७४॥ समाधि वर्णन दोहा ॥ और हेतु मिलि करि जहां होत सुकर अति काज। ताहि समाधि बखानहीं भूषण जे कबिराज १७५॥ उदाहरण सवैया ॥ बैरु कियो शिव

चाहतु हो तब लों अरिबाह्यो कटार कठेठ्यो । ज्योंहि मलेच्छहि छोड़े नहीं सरजामन तापर रोसमें पैठ्यो ॥ भूषण क्यों अफजल्ल बचै अटपाउ के सिंहको पाउँउमेठ्यो । बीछूके घाय धौंक्यों इधरक्कहै तौ लागि धाय धराधर बैठ्यो १७६ ॥ समुच्चयवर्णन दोहा ॥ एकबारगी भयो जहँ बहुत जानिकों बन्ध । ताहि समुच्चय कहत हैं भूषण देखि प्रबन्ध १७७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ मांगि पठायो शिवा कछुदेशु उजीर अजानानि बोल गहेना । दौरि लियो सरजा परनालौं यों भूषण जो दिन दोउ लगेना ॥ धांकसो खाक बिजैपुर भो मुख आइगो खान खवासके फेना । भैभर की करकी हरकी धरकी उर ये दिलसाहि कि सेना १७८ ॥ दोहा ॥ बस्तु अनेकनि को जहां बरणत एकहि ठौर । ताहि समुच्चय कहत हैं कोऊ कबि शिरमौर १७९ ॥ उदाहरण सवैया ॥ सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषण होति है आदर जामें । सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलके परजामें ॥ दान कृपानहुको करिबो करिबो अभैदानहु को बरजामें । साहिनसों रण टेक बिबेकहु सो गुण एक शिवा सरजामें १८० ॥

प्रत्यनीकवर्णन दोहा ॥ जहां जोरावर शत्रुके पक्षी पै करै जोर । प्रत्यनीक तासों कहत भूषण बुद्धि अमोर १८१ ॥ उदाहरण सवैया ॥ लाजधरो शिवा जीसों लरो सब सैयद मीर पठान पठाइकै । भूषणावे गढ़कोट तिहारे यहां तुम क्यों भटतोरे रिसाइकै॥ हिन्दुनकी पतिसों न बसाति सतावत हिन्दु गरीबन आइकै । लीजै कलंकन दिल्लिके बालम आलम आलमगीर कहाइकै १८२ ॥ अर्थापत्तिवर्णन दोहा ॥ वह जीत्यो तौ यह कहा यो कहनावति होइ । अर्थापत्ति बखानहीं ताहि सयाने लोइ १८३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ शयनमें साहिनको सुन्दरी सिखावैं ऐसे सरजासों बैर जनि करौ महाबली है । पेसकसे भेजत विला-इति परत काल सुनिके जिहाजानिह्वै करनाटथ-लीहै ॥ भूषण भनत गढ़कोट साहिमुलुक दै शिवासों सलाह राखिये तो बात भलीहै । जाहि देत दण्ड तुम डरिकै अखण्ड सोई दिल्लीदल मली तो तिहारी महाचलीहै १८४ ॥ काव्यलिंग वर्णन दोहा ॥ है दृढ़ाइबेजो अरथ ताको करत दृढ़ाउ । काव्यलिंग तासों कहत भूषण जे कबि राउ १८५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितिलै जीतिये

बिलाइतिको साहकीजै बलक बिलाइतिके बन्दि अरडावरे। भूषण भनत कीजै उत्तरी भुवालवश पूरबको लीजिये रसाल गजछावरे ॥ दक्षिणके नाहसों सिपाह निज बेरु करि अवरंगसाहजू कहाइये न बावरे। कैसे शिवा मनुगढ़ देत अवरंगै गढ़ गाढ़ेगढ़ पतीगढ़ लीन्हे और रावरे १८६ ॥ अर्थान्तरन्यासवर्णन दोहा ॥ कह्यो अरथ ताही लिये वहइ अरथ जहँ होइ। अर्थान्तरन्याससो भूषण कहि सब कोइ १८७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ साह तनय सरजा समरत्थ करी करनी धरनी पर नीकी। भूलिगे भोजसे बिक्रम से औ भई बलि बैन कि कीरति फीकी ॥ भूषण भिक्षुक भूपभये भलि भीखलै केवल भौसिलाही की। नेकाकि रीझ धनेश करे लखि ऐसियै रीति सदा शिवजीकी १८८ ॥ प्रौढ़ोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहँ उतकरष अहेतुको बरणतहैं करिहेत। प्रौढ़ोक्ति तासों कहत भूषण कबि विरदेत १८९ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ मानसरवासी हंसबसन समान होत चन्दन सों घस्यो घन सारोन घरीकहै। नारद की शारद की हाँसी में कहाँसी सम शरद की सुरसरी कौन पुंडरीकहै ॥ भूषण भनत छक्यो

क्षीरधि में वोह लेत फैन लपटानो ऐरावतको करी कहै। कैलास में ईश ईश शीश रजनीश यहौ अवनीश शिवाके न यशको शरीकहै १९०॥ संभावनावर्णन दोहा ॥ जो यों होइ तौ होइयों यह संभावना होइ। ताहि कहत संभावना भूषण कबि सब कोइ १९१॥ उदाहरण कवित्त ॥ लोमसकी ऐसी आयुहोइ कौनऊ उपाउ तापर कवच जो करन वारो धरिये। तापर जो हूजिये सहस बाहु तापर सहस गुन साहस जो भीम्हूंते करिये॥ भूषण कहै यों अवरंग जूसों उमराउ नाहक कहौ तौ जाय दक्षिण में मरिये। चलैना कछू इलाज भेजियतु वेहीकाजु ऐसी होइ साजु तो शिवासों जाइ लरिये १९२॥ मिथ्याध्यवसिति वर्णन दोहा ॥ झूठ अर्थकी सिद्धिको झूठोवरणत आन। मिथ्याध्यवसिति ताहिको भूषण कहत सुजान १९३॥ उदाहरण दोहा ॥ पगरन में चल यों लसै ज्यों अंगद पग ऐन। ध्रुव सों ध्रुव सों मेरु सों शिवसरजा को बैन १९४॥ उल्लासवर्णन दोहा ॥ एकहिके गुण दोषसे औरे के गुण दोष। बरणतहैं उल्लास सो सकल सुकवि करि तोष १९५॥ उदाहरण सवैया ॥ काजमही शिवराज बली हिन्दवान बढ़ाइबे को

उरऊटै। भूषण भू निरम्लेच्छ करी चहै म्लेच्छनि मारिबे को रण कूटै॥ हिन्दु बचाइ बचाए रही अमरेश चन्दावतलों कोउ टूटै। चन्द अलोकति लोक सुखी यहि कोक अभाग जो शोक न छूटै १९६॥ दोषेण गुणोयथा कवित्त॥ देश दह बट्ट कीन्हें लूटिकै खजाने लीन्हे बचन गढ़ाइ कछु गढ़ शिरताज के। तोरादार सकल तिहारे मन सबदार डांड़े जिनके सुभाय जगदेवजाजके॥ भूषण भनत पात साहिको यों लोग सब बचन सिखावत सलाहकी इलाजके। डावरे की बुद्धि ह्वैकै बावरे न कीजै बैरु रावरे के बैरु होत काज शिवराजके १९७॥ गुणेनगुणोयथा दोहा॥ नृप सभा मैं आपनी चहत बड़ाई काज। साह तनय शिवराजके करत कवित कबिराज १९८॥ दोषेणदोषोयथा दोहा॥ शिव सरजाके बैरको यह फल आलमगीर। छूटे तेरे गढ़ सबै कूटेगए उजीर १९९॥ अवज्ञावर्णन दोहा॥ औरे के गुणदोष ते औरके गुण दोष। जहां अवज्ञा ताहि सों कहत सुकबि मति पोष २००॥ उदाहरण सवैया॥ औरनि के अनगाढ़े कहा अरु बाढ़े कहा नहिं होत चहा है। औरनि के अनरीझे कहा अरु रीझे कहा न

मिटाव तहाहै ॥ भूषण श्रीशिवराजहि मांगिये एक महीपर दानि महाहै। मांगन औरनि के दरबार गए तौ कहा न गये तौ कहाहै २०१॥

अनुज्ञावर्णन दोहा॥ जहां सरस गुण देखिकै करै दोष को हौस। ताहि अनुज्ञा कहत हैं भूषण कबि इहिरौस २०२॥ उदाहरण कवित्त॥ ज़ाहिर जहांन सुनि सुनि दानके बखान महादानि साहतनै गरीबनिवाज के। भूषण जवाहिर जलूसजर वाफ जोति देखि शिवसरज़ाकी सुकबिसमाज के। तप करि करि कमलापति सों मांगत यों लोग सब करि मनोरथ ऐसी साजके॥ बैपारी जहाज के न राजाभारी राजके भिखारी हमैं कीजै महाराज शिवराजके २०३॥ लेशवर्णन दोहा॥ जहँ बरणत गुण दोषकै कहे दोष गुणरूप। भूषण ताको लेश कहि गावत हैं कबिभूप २०४॥

उदाहरण दोहा॥ उदैभान राठौर गो धीरजु गढ़ धरिऐंड। प्रगटै फल ताको लह्यो परिगो सुरपुर पैंड २०५॥ कोऊ बचत न सामुहे सरजासों रणसाजि। भलि कीन्ही पिय समरते जीव लै आएभाजि २०६॥ तद्गुणवर्णन दोहा॥ जहां आपनोरंग तजि गहै और को रंग। ताको तद्गुण

कहतहैं भूषण बुद्धिउतंग २०७॥ उदाहरण कवित्त ॥ पंपा मानसर आदि अगन तलावलागे जिनकी परनि मैं अकथ यूथगथके। भूषण यों साज्यो राइगढ़ शिवराज रहै देवचकि ताहिकै बनाइ राजपथके॥ बिनबल अबल ककान आसमान मैं हौं लेत शिवराज जहां इन्दु औउडुहथके। महल उतंग मणि ज्योतिनकेसंग आनिकैयो रंग चकहा गहत रबिरथके २०८॥ पूर्वरूपवर्णन दोहा॥ प्रथम रूप मिटिजात जहँ फेरि वैसई होत। भूषण पूरबरूप सो कहत ताहि कबिगोत २०९॥ उदाहरण सवैया॥ ब्रह्मके आननते निकसी ते अत्यंत पुनीत तिहूं पुर मानी। राम युधिष्ठिर के बर में बलमीकहुँ ब्यासके संग सुहानी। भूषण यों कविके कबिराजनि राजनिके गुणपाय निसानी॥ पुण्य चरित्र शिवासरजै बरन्हाय पवित्र भई बर बानी २१०॥ यों शिरको छहरावत छार है जाते उठै असमान बघूरे। भूषण भूधरऊधर के जिन के धुनि धक्कनियों बलरूरे॥ ते सरजा शिवराज दिये कबिराजनिको गजराज गरूरे। शुंडनिसों पहिले जिन शोखिकै फेरि महामदसों नदपूरे २११॥ श्रीसरजासल हेरिकेयुद्धघने उमरावनके

घर घाले। कुम्भ चन्द्रावत सैद पठान कवंधनि धावत भूधर हाले॥ भूषणयों शिवराज कि धाक भये पियरे अरुण रँगवाले। लोहै कटे लपटे अति लोहु भये मुँह मीरनके पुनिलाले २१२॥ यों कविभूषण भाषतुहै यकतो पहिले कलिकाल कि सैली। तापर हिन्दुनकी सब राह सुऔरँग साहकरी अति मैली॥ साहतनै शिवके डरसों तुरको गहि बारिधिकी दिशि पैली। वेदपुराणन की चरचा अरचा द्विज देवन की पुनि फैली २१३॥ अतद्गुणवर्णन दोहा॥ जहँ संगतिमें और को गुण कछु बैनहि लेत। ताहि अतद्गुण कहत हैं भूषण सुकवि सुचेत २१४॥ उदाहरण सवैया॥ दीनदयाल दुनी प्रति पालक जे करता निरम्लेच्छ मही के। भूषण भूधरि उद्धरि-बो सुने और जिते गुनके सब जीके॥ या कलि में अवतार लियो तउते शिवराज सुभाव बली के। आइधस्यो हरितै नररूप पै काज करै सि-गरे हरिही के २१५॥ दोहा॥ शिवसरजा की जगतमें राजति कीरति नौल। अरि तिय द्वग अंजन हरे तऊ धौलकी धौल २१६॥ कवित्त॥ साहनन्द सरजा शिवा के सनमुख आइ कोऊ बचि

जाइ न गनीम भुजबल में। भूषण भनत भौंसिला की दल दौर सुनि धाकही मरत म्लेच्छऔरंगके दल में॥ रात्यो दिन रोवतिरहति जवनीहै शोगु पत्योई रहत दिल्ली आगरेसकल में। कज्जल कलित असुवानिके उमँग संग दूनोहोत रंग जमुनाके मिलि जलमें २१७॥ मीलितवर्णन दोहा॥ सदृश वस्तुमें मिलि जहां होत न नेकु लखाइ। मीलित तासों कहतहैं भूषण जे कबिराइ २१८॥ उदाहरण कवित्त॥ इन्द्रनिज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु इन्द्रको अनुज हेरै दुग्धधिनदीशको। भूषण भनत सुरसरिताको हंसहेरैबिधिहेरै हंसको चकोररजनीशको॥ साहतनै शिवराज करनी करीहै तैंजु होत है अचंभौ देव कोटि यों तेंतीसको। पावत न हेरे तेरे यशमें हेराने निज गिरिको गिरीश हेरे गिरिजा गिरीश को २१९॥ उन्मीलितवर्णन दोहा॥ सदृश बस्तु में मिलैपुनि जानत कौनहु हेत। उन्मीलित तासों कहत भूषण सुकबि सुचेत २२०॥ उदाहरण दोहा॥ शिवसरजा तुव सुयश में मिले धौल छबितूल। बोल बासते जानियतु हंसचमेली फूल २२१॥ सामान्यवर्णन दोहा॥ भिन्नरूप जहँ सदृश में भेदु न जान्यो जाइ। ताहि कहत सामान्य हैं भूषण

कबि समुदाइ २२२ ॥ उदाहरण सवैया ॥ पावस की इकराति भली न महाबली सिंह शिवागमके ते। म्लेच्छ हजारनि ही मरिगे दशही मरहट्टनिके झमके ते ॥ भूषण हालि उठे गढ़ भूमि पठान कवंधनिके धमके ते। मीरनिके अवसान गए मिलि धोपनि सों चपला चमके ते २२३ ॥ विशेषकवर्णन दोहा ॥ भिन्नरूप जहँ सदृश में लहिये कछुक बि-शेख। ताहि बिशेषक कहतहैं भूषण सुमति उ-लेख २२४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अहमदनगर के थान किरवान लैकै नव शेरी खान सों खुमान भिर्‍यो बलतें। प्यादेन सों प्यादे पखरैतनि सों पखरैत बखतरवारे बखतरवारे हलतें ॥ भूषण भनत एते मान घमसान भयो जान्यो ना प-रतु कौन आयो कौन दलतें। सम बेष ताके तहाँ सरजा शिवाकेबांके बीर जाने हांके देत मीरजाने चलतें २२५ ॥ पिहित वर्णन दोहा ॥ पर के मन की जानि गति ताको देत जनाइ। कछू क्रिया करि कहतहैं पिहित ताहि कबिराइ २२६ ॥ उदाहरण दोहा ॥ गैरि मिसिल ठाढ़े शिवा अन्त-र्यामी नाम। प्रगट करी रिस साह को सरजा करिन सलाम २२७॥ आनि मिल्यो अरि यों गह्यो

षखानि चकत्ता चाउ। साहतनय सरजा शिवा दियो मुच्छपर ताउ २२८॥ प्रश्नोत्तर वर्णन दोहा॥ कोऊ पूछै बात कछु कोऊ उत्तर देत। प्रश्नोत्तर तासों कहत भूषण बुद्धि निकेत २२९॥ उदाहरण सवैया॥ लोगनिसों भनि भूषण यों कहै खान खवास कहा सिख देहौ। आवत देख निकेत शिवासरजा मिलिहौ भिरिहौ कि भगैहौ॥ आदि लकी सभा बोलिउठी यों सलाहकरौ व कहौ भजिजैहौ। लीन्हो कहा लरिकै अफजल्ल कहा लरिकै तुमहूं अब लैहौ २३०॥ दोहा॥ को दाता को नर बड़ो को जग पालनहार। कबि भूषण उत्तर दियो शिव नृप हरि अवतार २३१॥ व्याजोक्ति वर्णन दोहा॥ आन हेतसों आपनो जहां छपावत रूप। व्याजउक्ति तासों कहत भूषण सब कविभूप २३२॥ उदाहरण सवैया॥ साहनके उमराव जितेक शिवा सरजा सब लूटिलये हैं। भूषणते बिन दौलति ह्वैकै फकीर ह्वै देश बिदेश गये हैं॥ लोग कहैं तुम्हैं दक्षिणजेइ सिसोदि-या रावरे हाल ठये हैं। देत रिसाइकै उत्तर यों हमहीं दुनियाते उदास भये हैं २३३॥ दोहा॥ शिवा बैर औरँग बदन लगीरहै नित आहि।

कबि भूषण बूझै सदा कहै देत दुख साहि २३४॥
लोकोक्ति वा छेकोक्ति वर्णन दोहा ॥ कहनावति जो लोक की लोकउक्ति सो जानि। जहाँ कहत उपमान हैं छेकउक्ति सो मानि २३५॥ लोकोक्ति उदाहरण दोहा॥ शिवसरजाकी सुधि करौ भली न कीन्ही पीव। सूबाह्वै दक्षिण चले धरेजात कहँ जीव २३६॥
छेकोक्ति उदाहरण दोहा॥ जे सुहात शिवराज को वे कबित्त रसमूल। जे परमेश्वर को चढ़ैं तेई आछे फूल २३७॥ वक्रोक्ति वर्णन दोहा॥ जहँ श्लेष के काकुसों अरथ लगावै और। वक्रउक्ति तासों कहत भूषणकबि शिरमौर २३८॥ उदाहरण कवित्त॥
साहतनै तेरे बैरु बैरिनको कौतुक सो बूझत फिरत कहौ काहेरहे तचिहौ। सरजाके डरहम आये इतै भाजि तौ बसिंह सोई यहि याही ठौरते उकचिहौ॥ भूषण भनत वै कहै कै हम शिव कहै तुम चतुराई सों कहत बात रचिहौ। शिव जापै रूठो तो निपट कठिनाई तुम बैर त्रिपुरारिके त्रिलोकमें न बचिहौ २३९॥ दोहा॥
कर मुहीम आये कहै हजरति मन सब दैन। शिवसरजासों जंगजुरि ऐहै बचिकै हैन २४०॥
स्वभावोक्ति वर्णन दोहा ॥ साँचो त्योंहीं बरणिये जैसो

जाति स्वभाव। ताहि स्वभावोक्ति कहैं भूषण जे कबिराव २४१॥ उदाहरण कवित्त॥ दान समै द्विज देखि मेरुहू कुबेरहूकी संपति लुटाइबे को लख्यो ललकतुहै। साहके सपूत शिवसाहिके बदनपर शिवकी कथनि में सनेह झलकतु है॥ भूषण जहान हिन्दवानिके उबारिबे को तुरकानिमारिबे को बीर बलकतु है। साहिन सों लरिबेकी चरचा चलति आनि सरजाके दृगनि उछाह ऊलकतु है २४२॥ काहू के कहे सुनेते जाही ओर चाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत हैं। भूषण भनत बात कहेते कहत खात कहेते पियत ऊँची सांसनि जहत हैं॥ पौढ़े हैं तो पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हमको हैं कहां करत यों ज्ञान न गहत हैं। साहि के सपूत शिव साहि तेरे बैर ऐसे साहि सब रात्यो दिन शोचत रहत हैं २४३॥ भाविक वर्णन दोहा॥ भयो होनहारो अरथ बरणत जहँ परतच्छ। ताको भाविक कहत हैं भूषण कबि मति स्वच्छ २४४॥ उदाहरण कवित्त॥ अजौ भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरषत भूतनि अहार लेत अजहूं उछाह है। भूषण भनत अजौ काटे कर बालनि के कारे कुंजरनि परी कठिन

कराह है ॥ सिंह शिवराज सलहेर के समीप ऐसो कीन्हों कतलान दिल्ली दलको सिपाह है। नदी रणमण्डल रुहेलनि रुधिर अजों अजौ रवि मण्डल रुहेलनि की राह है २४५ ॥ गज घटा उमड़े महाघन घटासी घोर भूतल सकल मद जल सों पटतु है। भूषण बढ़त भौंसिला भुआलकों यों तेज जेतो सब बारहौ तरनि में बढ़तु है ॥ बेला छाड़ि उछलत सातो नीर निधि मन मुदित महेश नहिं नाचतु लहतु है। शिवा जी खुमान दल दौरत जहान पर आनि तुरका-निपर प्रलौ प्रगटतु है २४६ ॥ भाविकछवि वर्णन दोहा ॥ जहँ दूरस्थित बस्तुको देखत बर्णत कोइ। भूषण भूषण राज यह भाविक छबि सो होइ २४७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ सूबनि साजि प-ठावतहै निज फौज लखै मरहट्टनि फेरी। औ-रँग आपनि दुर्गजमाति बिलोकति तेरेहि फौज दरेरी ॥ साहितनै शिवसाहि भई भनै भूषण यों तुव धांक घनेरी। रातिहुँ द्यौस दिलीशनके तुव सेन कि सूरति सूरति घेरी २४८ ॥ उदात्त वर्णन दोहा ॥ अति सम्पति वर्णत जहां तासों कहत उदात। कै आनै सो लखाइये बड़ी

आन की बात २४९ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ द्वारानि मतंग दीसै अङ्गनै तुरंगहींसै बन्दीजन धारण असीसै यशरत हैं । भूषण बखानै जरबाफ के सम्याने ताने झालरिन मोतिनके झुण्ड झुलरतहैं ॥ महाराज शिवा के निवाजे कबिराज ऐसे साजि कै समाज तिहि ठौर बिहरत हैं । लाल करै प्रात जहां नीलमणि करै राति इहि भांति सरजा की चरचा करत हैं २५० ॥ दोहा ॥ या पूना में मति टिकौ खान बहादुर आइ । ह्यांई साइस्त खानको दीन्ही शिवा सजाइ २५१ ॥ अत्युक्ति वर्णन दोहा ॥ जहां शूरतादिकन की अति अधिकाई होइ । ताहि कहत अत्युक्ति हैं भूषण जे कवि लोइ ॥ २५२ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहतनै शिवराज ऐसे देत गजराज जिन्हैं पाइ होत कबिराज बेफिकिरि हैं । झूमति झलझलाति झूलै जरबाफिनकी जकरे जंजीर जोर करत किरिरि हैं ॥ भूषण भवँर भननात घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं । जिनकी गरज सुनि दिग्गज बेआब होत मदहीके आब गरगाप होत गिरि हैं २५३ ॥ आज यहि समै महाराज शिवराज

तुहीं जगदेव जनक ययाति अंबरीकसों। भूषण भनत तेरेदान जलनिधिमहँ गुनिनको दारिद गयो बहि खरीकसों॥ चन्द्रकर किंजलक चांदनी पराग उडु बृन्द मकरन्द बुन्द पुंजको सरीकसों। कुंदसम कयलास नाक गंगनाल तेरे यश पुण्डरीकको अकाश चंचरीकसों २५४॥

दोहा॥ महाराज शिवराज के जेते सहजस्वभाइ। औरनिको अति उक्तिसे भूषण कहत बनाइ २५५॥ निरुक्तिवर्णन दोहा॥ नामनिको निज बुद्धिसों कहिये बात बनाइ। तासों कहत निरुक्तिहैं भूषण जे कबिराइ २५६॥ उदाहरण दोहा॥ कबिगणको दारिद दुरद याही दल्यो अमान। याते श्रीशिवराजको सरजा कहत जहान २५७॥ हेतुवर्णन दोहा॥ या निमित्त यहई भयो यों जहँ वर्णन होइ। भूषणहेतु बखानहीं सकल सयाने लोइ २५८॥ उदाहरण कवित्त॥ दारुण सुदैत्य हिरनाकुश बिदारबेको भयो नरसिंहरूप तेज बिकरार है। भूषण भनत त्योंही रावणके मारिबेको रामचंद्र भयो रघुकुल सरदार है॥ कंसके कुटिलबल वंशनि बिदारिबेको भयो यदुराइ बसुदेवको कुमार है। पृथ्वी पुरुहूत साहि के सपूत

शिवराज म्लेच्छनि के मारिबेको तेरो अवतार है २५९॥ अनुमानवर्णन दोहा ॥ जहां काजते हेतुकै जहां हेतुते काज। जानिपरत अनुमानसों कहि भूषण कबिराज २६०॥ उदाहरण कवित्त ॥ चित्त अनचैन आंसू उमगत नैन देखि बीबी कहै बैन मियां कहियतु काहिनै। भूषण भनत बूझे आये दरबार ते कँपत बारबार क्यों सँभारत न नाहिनै॥ सीनो धक धकतु पसीनो आयो देह सब हीनोभयो रूप न चितौत बामे दाहिनै। शिवाजूकी शंकमान गयेहो सुखाइ तुम्हैं जानियतु दक्षिण को सूबाकस्यो साहिनै २६१॥ छेकऔरलाटानुप्रासवर्णन दोहा ॥ स्वर समेत अक्षर कि पद आवत सदृश प्रकास। भिन्न अभिन्ननि पदनि को छेकलाटानुप्रास २६२॥ छेककाउदाहरण छप्पै ॥ दिल्लिय दलनि गँजाइ करि शिवसरजा निरशंक। लूटिलियो सूरति शहर बंकक्करि अति डंक॥ बंकक्करि अतिडंकक्करिअस शंकक्कुलिखल। सोच्च चकित भरोच्च चलिय विमोच्च चखजल॥ तट्टइ मन कट्टिक सोइ रट्टिल्लिय। सद्दिशि दिशि मद्दविभइ रद्दिल्लिय २६३॥ गतबलखान दलेलहु बखान

वहादुर मुद्द। शिवसरजा सलहेरि ढिग क्रुद्दद्दरि कियजुद्द ॥ क्रुद्दद्दरि कियजुद्दद्दरि अरिअद्द-द्दरिकरि। मुण्डड्डरि तहँ रुण्डड्डकरत डुंडड्डग भरि॥ खेदिद्दर वर छेदिद्दयकरि मेदद्दधि दल। जंगग्गति सुनिरंगग्गलि अवरंगग्गत बल २६४ ॥ मुण्डकटत कहुँ रुण्डनटत कहुँ शुण्ड पटतघन। गिद्धलसत कहुँ सिद्ध हँसत सुखबिद्ध रसतमन ॥ भूतफिरत करिबूत भिरत सुरदूत घिरत तहँ। चंडि नचति गनमंडि रचति धुनि डण्डि मचति जहँ ॥ इमि ठानि घोर घमसान अति भूषण ते जु कियो अदल। शिवराज साहि सुवखग्ग बलदलि अडोल बहलोलदल २६५ ॥

तथा कवित्त ॥ बेहर बरार बाघ बांदर बिलार बिग बगरे बराह जानवरनिके जोम हैं। भूषण भनत भारे भालुक भयानक हैं भीतर भवन भरे लील-गऊ लोमहैं ॥ पैडायल गजगन गैंड़ा गरशत गन गेहनि में गोहनि गरूरगहे गोम हैं। शि-वाजी की धांकमिले खलकुल खाकबसे खलनके खेरनि खबीसनके खोम हैं २६६ ॥

लाटानुप्रासका उदाहरण कवित्त ॥ तुरमती तहँ खाने तीतुर गुसल खाने सूकर सिलहखाने कूकतकरीश हैं। हरिण

हुरमखाने सिंहहैं शुतरखाने पीलखाने पाडी हैं करंजखाने कीश हैं ॥ भूषण शिवाजी गाजी खग्गसों खपाये खलखाने खलनि के खेरेभये खीश हैं । खडजी खजाने खरगोश खिलवतखाने खीसें खोलै खसखाने खांसत खबीशहैं २६७॥ तथा दोहा ॥ औरनिके याँचे कहा नहिं याँच्यो शिवराज । औरनिके याँचे कहा जो याँच्यो शिवराज २६८ ॥ जमकवर्णन दोहा ॥ भिन्न अर्थ फिरि फिरि जहां वेई अक्षर बृन्द । आवतहैं सो जमक कहि बरणत बुद्धि बिलन्द २६९ ॥ उदाहरण कवित्त॥ पूनाबारी सुनिकै अमीरनिकी गतिलई भाजिबे का मीरनि समीरनिकी गतिहै । मार्‍यो जुरि जंग यशवन्त यशवन्त जाके संगकेता रजपूत रजपूतपतिहै ॥ भूषण भनै यों कुलि भूषण सिवैला शिवराज तोहिं दीनी शिवराज बरकतिहै । नौहू खण्ड दीप भूप भूतलके दीपआजु समैके दिलीप दिलीपतिको सीदतिहै २७० ॥ पुनरुक्तवदाभासवर्णन दोहा ॥ भासतही पुनरुक्तसों नहिं निंदान पुनरुक्त । पुनरुक्त वदाभाससो भूषण बर्णत युक्त २७१ ॥ उदाहरण कवित्त॥ अरिन के दलसैन संगर में समुहाने टूक टूक सकल कै डारे घमसान में । दूर-

बार पूरो महानद परवाह पूरो बढ़त है हाथिन के मदजलदान मैं ॥ भूषण भनत महाबाहु भौंसिला भुवाल सूररवि समतेजु तीखन कृपान मैं। भाल मकरन्द कुलचन्द कलानिधि तेरो सरजा शिवाजी जसु जगत जहान मैं २७२ ॥

कामधेनु चित्रवर्णन दोहा ॥ लखे सुने अचरज बढ़े रचना होइ बिचित्र। कामधेनु आदिक घने भूषण बरणत चित्र २७३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ ध्रुव जो गुरुता तिनको सुरभूषण दानि बड़ो गिरिजा पिव है। हुवसो हरितारिन को तरु भूषणदानि बड़ो सरजा शिवहै ॥ भुवको भरता दिनको नर भूषण दानि बड़ो वरजा शिव है। तुव जो करता इनको अरु भूषण दानि बड़ो वरजा निव है २७४ ॥ संकर वर्णन दोहा ॥ भूषण एक कबित्त मैं भूषण होत अनेक। संकर तासों कहत हैं जिन्हैं कबित की टेक २७५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ ऐसे वाजिराज देत महाराज शिवराज भूषण जे बाजकी समाजै निदरत है। पौनपाइ हीन दृग घूंघट में लीन मीनजल मैं बिलीनक्यों बराबरी करत है ॥ सबते चलाक चित्त तेऊ कुलिआलम के रहैं उरअन्तर ते धीर न धरत

है । जिनचढ़ि आगे को चलाय तुरी तीर तीर एक भरि तेऊ तीर पीछही परत है २७६ ॥

अंथ सूचीवर्णन दोहा ॥ उपमा अनन्वय कीह बहुरि उपमा प्रतीप प्रतीप । बर्णतसा उपमेयोपमा मालोपमा कवि दीप १ ललितोपमा रूपक बहुरि परिनाम पुनि उल्लेख । स्मृति भ्रांति अरु संदेह कह अपह्नुति शुभवेख २ हेतुपह्नुति बहुरि पर्जस्त पह्नुति मानि । भ्रांत पूर्व अपह्नुत्यो छेका अपह्नुति जानि ३ कैतवापह्नुति मनो उत्प्रेक्षा सुबखानि । रूपकातिशयोक्तिभेदकातिशयोक्ति बखानि ४ अक्रमातिशयोक्ति चंचलातिशयोक्ति सुलेख । अत्यंतातिशयोक्ति पुनि पढ़िये सामान्य बिशेख ५ तुल्यजोगदीपका वृत्तदीप प्रति बस्तु मा दृष्टांत । सुनि दर्शना व्यतिरेक पुनि सह उक्ति बरनतसंत ६ विनोक्ति बहु समासोक्ति सुपरि करौ अहवंस । परिकरांकुरत्यों श्लेष अप्रस्तुत परसंस ७ परजा उकति गनाइये व्याजस्तुति आक्षेप । बिरोध बिरोधाभास है बिभावना सुख खेप ८ बिशेषोक्ति असम्भवो बहुरयो असंगति लेखि । विषम समसुबिचित्र प्रहरषन विषादन पेखि ९ अधिक

अन्योन्य बिशेषब्याघात परस्परचारु । गुंफ एकावली मालादीपक बर्णत सारु १० ॥ यथासंख्य बखानिये पर्जाय पुनिपरिबृत्ति । परिसंख्य कहत बिकलपहैं जिनके सुमति संपत्ति ११ बहुरयो समाधि समुच्चयों अरु प्रत्यनीक बखानि । कहत अर्थापत्ति कबिजन काब्यलिंग सुजानि १२ अरु अर्थ अंतर न्यास भूषण प्रौढ़ उक्ति गनाइ । संभावना मिथ्याध्यवसिति पुनि उल्लासहिगाइ १३ अवज्ञा अनुज्ञालेस तन्दुन पूर्वरूप उरेखि । बहुरयो अतन्दुन अनगुनौ मीलित उन्मीलित लेखि १४ सामान्यरु बिशेष पिहितो प्रश्न उत्तर जानि । पुनि ब्याज उक्तिरुलोक उक्तिरु छेक उक्ति बखानि १५ बक्र उक्ति स्वभाव उक्ति सुभाविको निरधारि । भाविक छबि अरु उदात अत्युक्ति बहुरि बिचारि १६ बरने निरुक्तिरु हेतु अनुमानौ छेक अनुप्रास। भूषण भनत पुनि जमकगनि पुनरुक्तबद आभास १७ चित्र सङ्कर एकसै भूषण कहे अरु पांच। सुनतही ग्रन्थनि मतै जिन्हैं सुकबि मानैं सांच १८॥ ग्रन्थरचनाकाल वर्णन दोहा॥

समसत्रह सैंतीसपर शुचि बदि तेरस भान ।

संबत (१७३०) भूषण शिवभूषणं कियो पढ़ियो सूनौ सुजान १ उपसंहार कवित्त ॥ एक प्रभुताको धाम सजे तीनों बेद काम रहैं पंचानन षड़ानन राजी सर्बदा । सातौ वार आठौ याम जाचक निवाजे नौ औतार थिर राजै कृष्ण त्यों हरि गदा ॥ शिवराजभूषण अटलरहै तौलौं जौलौं त्रिदश भुवन सब गंग और नर्मदा । साहि तनै साहसीक भौंसिला सूरजबंसशिरमिराज तौलौं सरजा थिर सदा १ ॥

इति शिवराजभूषणभूषणकविकृत सम्पूर्णम् ॥

दोहा ॥ परमानन्द अनन्द मन रहत सदा दिन रैन । भूषण काव्य प्रकाश किय रसिकनको सुखदैन १ सम्वत उन्निस पचासमें पूसशुक्लरवि वार। सातै शुभदिन शुभकर ग्रंथ भयो तइयार २ सकल सुकबिबिनती सुनहु कहत जोड कर जोर। काव्यरीतिजानतनहीं लघुमतिमति अतिमोर ३ यथा उचित यह शुधकिय अपनीमति अनुसार। भूलचूक जो होय कछु कबिजन लेहिं सुधार ४॥

आपका कृपाभिलाषी ग्रन्थसंग्रहकर्ता
परमानन्द वल्द बंगालीलाल सुहाने
जबलपूर, मध्यप्रदेश